Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-2; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 62-66
©2026 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com
Author's:

अतुल मिश्र
यूज़ीसी नेट - हिन्दी, प्रयागराज

Corresponding Author :
अतुल मिश्र
यूज़ीसी नेट - हिन्दी, प्रयागराज

आलोचना और निबन्ध के क्षेत्र में आचार्य शुक्ल की स्वस्थ, निरपेक्ष व विराट दृष्टि

सारांश - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी आलोचना और निबन्ध के क्षेत्र में एक स्पष्ट व सार्थक मार्ग को प्रशस्त किया जिससे आलोचना और निबन्ध को एक समुन्नत दशा-दिशा प्राप्त हुई। आचार्य शुक्ल ने स्वस्थ, सशक्त और निरपेक्ष दृष्टि का निर्माण किया। प्रस्तुत आलेख इस विषय पर सघन और सफल विमर्श करता है कि आचार्य शुक्ल ने किस प्रकार आलोचना एवं निबन्ध को सूत्रबद्ध करते हुये उन्हें आधुनिक और मौलिक दृष्टि से सम्पन्न किया। आचार्य शुक्ल की आलोचना दृष्टि सम्प्रति भी हिन्दी आलोचना संसार की स्थायी सम्पिŸा है, मौलिक निधि है। इसी कारण उसका आश्रय लेकर आज भी हिन्दी आलोचना व निबन्ध संसार सर्वथा प्रशास्तिगामी है। आचार्य शुक्ल ने शास्त्र-स्वतन्त्र होते हुये भी शास्त्र-सापेक्ष स्थापनाएँ प्रदान की। इसी प्रकार शास्त्र-परतन्त्र होते हुए भी शास्त्र-
निरपेक्ष दृष्टि प्रस्तुत किया। इस आलेख/शोधालेख मे आचार्य के कृतित्व पक्ष के विविध आयामों को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। आचार्य शुक्ल की सौन्दर्य दृष्टि नैतिकता के कठोर अनुशासन में बद्ध मानी जा सकती है किन्तु वह सापेक्षता और आग्रहों के आवरणों से प्रायः मुक्त ही रही है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लोकमंगल, साधारणीकरण, रस-विमर्श, कलावाद आदि सभी संभावित पक्षों पर गहन विमर्श किया।
बीज शब्द - सारग्रहिणी, अन्तर्यात्रा, मनोविकार, जनोन्मुखता, रस-विमर्श, लोकमंगल, साधारणीकरण, भावपक्ष, बुद्धितत्व, मुक्तावस्था

हिन्दी सहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र आचार्य रामचंद्र शुक्ल महज एक व्यक्ति या प्रवृत्ति का नाम नहीं, अपितु स्वयं में एक समग्र और जीवंत इतिहास हैं। हिन्दी साहित्य के समस्त परिदृश्य और परिप्रेक्ष्य में आचार्य शुक्ल का व्यक्तित्व और कृतित्व ऐसा अप्रतिम स्थल है जहाँ विविधवर्णीय छटा की स्थिति बनती है। आचार्य शुक्ल के रचनारुपी पट

को खोलने के लिए हमें न जाने कितने बंद और गूढ़ पटों को अनावृत करना होगा। आचार्यवर ने रचनाधर्मिता के प्रत्येक पक्ष को केवल स्पर्श ही नहीं किया है वरंच रचना कौशल की ठोस और सुखद इमारत को ही निर्मित कर दिया है। रचनाकार, निबन्धकार, साहित्य इतिहास लेखक, चिंतक, समीक्षक और संस्कृतिचेता इत्यादि विविध आयाम उनसे सम्बद्ध हैं किन्तु एक सशक्त साहित्य इतिहास लेखक के अतिरिक्त उनके कलम की कौशलता निबन्ध और आलोचना के क्षेत्र सर्वाधिक दीख पड़ती है।

प्रख्यात आलोचक रहे और विशेषतः विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम के आलोचना क्षेत्र में महत् भूमिका निवर्हन करने वाले श्याम सुंदर दास ने आचार्य शुक्ल की आलोचनात्मक दृष्टि की न केवल प्रशंसा की है अपितु उपर्युक्त संदर्भ में अपनी कृतज्ञता भी ज्ञापित की है। उपन्यास, नाटक-एकांकी के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान देने वाले डॉ रामकुमार वर्मा ने अपने लेख ‘सरस स्मृति’ में लिखा है, “पं. रामचंद्र शुक्ल जी की साहित्य-सेवा यों तो ब्रजभाषा-काव्य से आरम्भ हुई किन्तु धीरे-धीरे उनके भावपक्ष पर बुद्धितत्व का प्राधान्य होता गया और वे ललित, मनोवैज्ञानिक और आलोचनात्मक िर्नबन्ध लिखने लगे। इसकी परिणति ‘चिन्तामणि’ निबंध-संग्रह में हुई।” 1
पंडित रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबन्ध और समालोचना संसार के शिखरस्थ चिंतक हैं। उनकी भावयित्री प्रतिभा सूक्ष्म, सारग्रहिणी तथा शास्त्र परतन्त्र होते हुए भी शास्त्र स्वतन्त्र है। उनकी मान्यताओं के आधार पर हिन्दी निबन्ध और आलोचना भारतीय समीक्षा जगत में अपने गौरवास्पद अस्तित्व का सम्यक् बोध करा सकती है, इस दृष्टि से उनके द्वारा किए गए कार्य सर्वथा संग्राह्य, श्लाध्य और नमस्य हैं। गंभीरता और किसी विषय में अन्तर में बैठकर उसे व्यक्त कर देने की क्षमता इनके व्यक्तित्व की अपनी वैशिष्ट्यता है। पौरस्त्य और पाश्चात्य दोनां धाराओं में आपने हिन्दी आलोचना को एक नई दिशा व दशा प्रदान की। आचार्य शुक्ल अकेले ऐसे आलोचक हैं जिन्होंने परंपरागत आलोचना शैलियों के प्रति सम्मान्य भाव रखकर भी अपने युग की आवश्यकताओं को पहचाना, समझा तथा उनके अनुरुप सही अर्थों में हिन्दी की अपनी आलोचना शैली को जन्म दिया। प्रख्यात् समीक्षक निर्मला जैन ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तक “रामचन्द्र शुक्ल-प्रतिनिधि संकलन“ में एक स्थल पर लिखा है, “शुक्ल जी की मानसिक बनावट को समझने के लिए उनके जीवन संबंधी तथ्यों को ध्यान में रखना उचित होगा। चन्द्र शेखर शुक्ल की लिखी हुई आचार्य शुक्ल की जीवनी से स्पष्ट है कि उनमें लोक-जीवन से संपृक्ति का जो प्रबल आग्रह बराबर दिखाई पड़ता है, उसका गहरा संबंध उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और परिवेश से है। मिर्जापुर में रमई पट्टी में पले-बढ़े शुक्लजी के लिए ‘प्रकृत’ और ‘प्रकृति’ उनके संपर्क और संस्कार का अनिवार्य संदर्भ हो गए। इस संदर्भ में उन्हें ‘देसीपन’ का वह संस्कार दिया, जो बराबर उनके विचारों में साग्रह प्रकट होता रहा।” 2
‘लोकमंगल’- यह शब्द आचार्य शुक्ल के आलोचना संसार का पर्याय है और इतना ही नहीं शुक्ल जी द्वारा प्रयुक्त यह शब्द सूत्र समस्त आलोचना संसार में एक अतीव महत्वयुक्त प्रतिमान ही बन गया। ‘काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था’ में आचार्य शुक्ल लिखते हैं - वह व्यवस्था या वृत्ति जिससे लोक में मंगल का विधान होता है, ‘अभ्युदय’ की सिद्धि होती है, धर्म है। अतः अधर्म वृŸा से हटाने में धर्म-वृत्ति की तत्परता, चाहे वह उग्र और प्रचंड हो, चाहे कोमल और मधुर- भगवान की आनंद- कला के विकास की ओर बढ़ती हुई गति है। यह गति यदि सफल हुई तो, धर्म की जय कहलाती है। 3 शुक्ल जी की दृष्टि में केवल मानव-समुदाय ही नहीं है अपितु उनका लोक मनुष्य और सृष्टि की व्यापक साझेदारी को समेटे हुए है। ‘हृदय का मधुर भाव’ शीर्षक कविता में वे मनुष्य और पक्षी के साहचर्य में ही जीवन की मूल्यवत्ता है, यह स्थापित करते हुए स्पष्ट रुप से कहते हैं -
“सहचर सारे थे हमारे रहते भी जहाँ,
कुछ सुख पावें पुण्यधाम वे हमारे हैं।

इनके सुखों से सुख अपना हट के दूर,
जीवन व मूल्य तो समूल हम हारे हैं।
पर ये हमारे, हम इसके बने हैं अभी,
जैसे हम इन्हें वैसे हमको ये प्यारे हैं।" 4

शुक्ल जी ने सर्वप्रथम अपने निबन्धों के संग्रह को 'विचार-वीथी शीर्षक से 1930 में प्रकाशित करवाया था किन्तु अनन्तर चार अन्य निबंधों के साथ इसका पुनर्मुद्रण 'चिंतामणि-1' के नाम से 1939 में हुआ जिसमें कुल सत्रह निबन्ध थे। इसी प्रकार चिंतामणि-2 1945 में 20 निबन्धों के साथ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने प्रकाशित किया। चिंतामणि-3 नामवर सिंह ने 21 निबन्धों के साथ जबकि चिंतामणि-4 कुसुम चतुर्वेदी व ओमप्रकाश ने 2004 में प्रकाशित किया जिसमें 1902 से 1939 तक के प्रकाशित कुल 47 निबन्ध सम्मिलित थे। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसके संदर्भ में समीचीन मत प्रस्तुत किया है, "चिंतामणि (प्रथम भाग) वस्तुतः चिंतामणि है। इसमें आचार्य शुक्ल की मेधा के गहरे चिंतन के परिणाम हैं..... इसमें चिंतन की मणियाँ संग्रहीत हैं। चिंतामणि एक ऐसा शुभ योग है जिसके अंतर्गत हदय को साथ लेकर यात्रा पर निकालने वाली बुद्धि के सभी अभीष्ट पूर्ण हो जाते हैं।" चिंतामणि (प्रथम भाग) की भूमिका में शुक्ल जी लिखते हैं, "इस पुस्तक में मेरी अन्तर्यात्रा में पड़ने वाले कुछ प्रदेश हैं। यात्रा के लिए निकलती रही है बुद्धि पर हृदय को साथ लेकर। अपना रास्ता निकालती हुई बुद्धि जहाँ कहीं मार्मिक या भावाकर्षक स्थलों पर पहुँची है, वहाँ हृदय थोड़ा बहुत रमता अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कुछ कहता गया है। इस प्रकार यात्रा के श्रम का परिहार होता रहा है। बुद्धि पथ पर हृदय भी अपने लिए कुछ-न-कुछ पाता रहा है। इस भूमिका का प्रथम वाक्य कितना महत्वपूर्ण है, इसका सहज अनुमान इसी संदर्भ से हो जाता है कि डॉ0. नामवर सिंह ने चिंतामणि (तीसरा भाग) का संपादन किया तो उसकी भूमिका का शीर्षक ही रखा- 'एक अर्न्तयात्रा के प्रदेश'। शुक्ल जी के निबंधों का एक महत पक्ष यह भी है कि उन्होंने अपने निबंधों में सूत्र शैली को जन्म दिया, यथा- 'श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।' 'बैर क्रोध का आचार का मुरब्बा है।' अथवा 'विद्वता किसी विषय की बहुत-सी जानकारियों का नाम है।' शुक्ल जी के आलोचना और निबन्ध के संसार में क्रम-संगति, शब्द-योजना, पद-योजना वाक्य-रचना, अन्विति, संगठन, अंलकरण, प्रतीक, बिम्ब-विधान, मुहावरे, लोकोक्ति आदि सभी विशिष्ट विधायक तत्व उपस्थित हैं। ध्यातव्य यह है कि शुक्ल जी ने परंपरागत शैलियों को भी भरपूर अपनाया है, यथा आगमन-निमगन, समास-व्यास, आत्मीयतापूर्ण, भावुकतापूर्ण, हास्य-व्यंग्यपूर्ण, संवाद या वार्तालाप शैली आदि।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के निबंधों में सामाजिक प्रत्यक्षीकरण, प्रगतिशीलता अथवा पर्याप्त जनोन्मुखता पर्याप्त रूप में उपस्थित है। 'भाव व मनोविकार' विषयक शीर्षक निबंध में उनका मत या निष्कर्ष है कि-भाव या मनोविकार नितांत मानवीय हैं किन्तु परिस्थितियों और वातावरण के कारण उनकी अभिव्यक्ति का स्वरूप निर्धारित होता है। यह उनके सूक्ष्म सामाजिक अध्ययन का परिणाम है। शुक्ल जी जनोन्मुखता को स्पष्ट रूप से अपने आलोचना व निबन्ध संसार में अभिव्यक्त करते हैं। वे एक स्थल पर संकेत में ही कहते हैं- सदाचार यदि प्रदर्शन के लिए और प्रचार के तौर पर स्वीकार किया जाता है तो निश्चित रूप से ढोंग है। अभिप्राय यह है कि शुक्ल जी के मत में समूचा व्यक्ति और समाज जीवन, व्यवस्था और क्रिया-व्यापार अवलंबित है केवल मन की गतिविधि नहीं। शुक्ल जी ने मनोविकारों को पौरस्त्य या पाश्चात्य के सांचे में नहीं अपितु समग्र सामाजिक बोध के साथ परखने का प्रयास किया। इस परिप्रेक्ष्य में प्रसिद्ध आलोचक एवं भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता के निदेशक रहे डॉ0 प्रभाकर माचवे ने अपने लेख 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल और उनकी समकालीन भारतीय साहित्य-समालोचनाः तुलनात्मक अध्ययन' में लिखा है, "शुक्ल जी, जो बाँगला, उर्दू के अलावा मराठी-गुजराती से भी परिचित थे, संस्कृत काव्यशास्त्र से अलग किन अन्य साहित्यिक विचार-प्रवाहों से प्रभावित हुए, जाने-अनजाने। वे तुलनात्मक धर्म विश्वास-पूर्वी और पश्चिमी दर्शन के अध्येता थे। वे चित्रकला

भी जानते थे और उन्हेंने एडविन आरनॉल्ड के 'लाइट ऑफ एशिया' का 'बुद्धचरित' अनुवाद भी किया। उनका साहित्येतिहास में एक पुरोधा का कार्य, उनकी काल-विभाजन की दृष्टि, उनके साहित्य द्वारा लोकहित के मानदंड रूढ़ि से हटकर भी थे और परंपरा से परिसीमित भी।" 5

आचार्य शुक्ल का 'रस-विमर्श' और 'साधारणीकरण सिद्धांत' साहित्य संसार के लिए सर्वथा अनुपमेय है। शुक्ल जी का सैद्धान्तिक समीक्षा ग्रन्थ 'रस मीमांसा' रस चिन्तन और विश्लेषण के क्षेत्र में स्वयं अपना प्रतिमान है। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे डॉ0 रामचंद्र तिवारी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी का गद्य-सहित्य' में लिखा है कि- आपने (आचार्य-शुक्ल) जीवन की क्रिया-भूमि, काव्य की भाव भूमि और समीक्षा की विचार भूमि में अदभुत सामंजस्य स्थापित किया है। आचार्य शुक्ल ने 'रसवाद' को आध्यात्मिक भूमि से उतारकर वैज्ञानिक आधार पर प्रतीष्ठित किया । उसे बौद्धिक चिंतन की दृष्टि से अधिक पूर्ण और विश्वसनीय बनाना। 6

साधारणीकरण पर चर्चा करते हुए आचार्य शुक्ल लिखते हैं कि रस भावों की अनुभूति है और साधारणीकरण इसका अनिवार्य तत्व। 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्रयवाद' में शुक्ल जी ने अनेक वैशिष्ट्यताओं तथा वैचित्रयताओं के माध्यम से मनुष्य जाति के सामान्य हृदय को देखने पर बल दिया है। आचार्य शुक्ल के आलोचक व निबन्धकार व्यक्तित्व में विस्तृत अध्ययन, सूक्ष्म अन्वीक्षण-बुद्धि और मर्मग्राहिणी प्रज्ञा का अद्भुत समन्वय है। वे हिन्दी के ऐसे अप्रतिम आलोचक हैं जिन्होंने भारतीय काव्यशास्त्र की महŸा, सारवŸा, उपायदेयता और व्यापकता का निष्पक्ष उद्घोष किया है। वे अपना मत व्यक्त करते हैं," शब्द शक्ति, रस और अलंकार ये विषय-विभाग काव्य समीक्षा के लिए इतने उपयोगी हैं कि इनको अन्तर्भूत करके संसार की नयी पुरानी सब प्रकार की कविताओं की बहुत ही सूक्ष्म मार्मिक और स्वच्छ आलोचना हो सकती है।" 7 शुक्ल जी के निबन्धों में बुद्धि और हृदय की सामंजस्यता है। शुक्ल जी की बुद्धिवादी यात्रा चलती तो है साहित्य के पथ पर किन्तु हृदय को साथ लेकर। रस को परिभाषित करते हुए शुक्ल जी ने कहा है, "हृदय की अनुभूति ही साहित्य में 'रस' और 'भाव' कहलाती है।" 8 "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान-दशा कहलाती है उसी प्रकार हदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।" 9

आचार्य शुक्ल ने लोकमंगल से लेकर साहित्य दर्शन, साधारणीकरण, आदिकाल व भक्ति साहित्य, रीति विषयक काव्य विवेचना कलावाद का खण्डन इत्यादि विभिन्न संदर्भो पर सघन पड़ताल की है। महीयसी महादेवी वर्मा उनका स्मरण करती हुई लिखती हैं, "मैंने भी उनके दर्शन तब किए जब मेरी दो-तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थी उनसे मिलना मानां अपने किसी आत्मीय बड़े-बूढ़े से मिलने का सुखद अनुभव था। गोलाई लिए कुछ चौड़ा मुख, मूछों के नीचे छिपी-सी मुस्कुराहट। क्या ऐसा स्नेहिल व्यक्तित्व हमारा विरोधी आलोचक हो सकता है? हममें से किसी का भी मन उनसे न कभी भयभीत हुआ, न उनका विरोधी। हमारी रचना-प्रक्रिया की सच्चाई ने उन्हें भी प्रभवित किया और उसके उपरान्त जो साहित्य का इतिहास लिखा गया, वह स्नेह की भूमिका में है।" 10

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : एक दृष्टि-हिन्दुस्तानी एकडेमी, प्रयागराज, संपादक डॉ0 रामकुमार वर्मा, डॉ0 जगदीश गुप्त, डॉ0 रामजी पाण्डेय, पृष्ठ 2, प्रथम संस्करण 1986
2. रामचन्द्र शुक्ल-प्रतिनिधि संकलन-निर्मला जैन व नामवर सिंह, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, पृष्ठ-11 व 12 सातवां संस्करण, 2014
3. वही, पृष्ठ 94, 95
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की लोकमंगल की अवधारणा- विद्यानिवास मिश्र, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज, पृष्ठ-3, प्रथम संस्करण, 1986

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनकी समकालीन भारतीय साहित्य- समालोचनाः तुलनात्मक अध्ययन- डॉ0 प्रभाकर माचवे, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज, पृष्ठ-86 प्रथम संस्करण, 1986
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- हिन्दी गद्य का साहित्य- डॉ0 रामचंद्र तिवारी, पृष्ठ 653,
7. वही पृष्ठ -654
8. वही पृष्ठ-655
9. रस मीमांसा - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 5, नागरी प्रचारिणी सभा, 1949
10. आचार्य रामचन्द्र शुक्लः एक दृष्टि- हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, संपादक डॉ0 रामकुमार वर्मा, डॉ0 जगदीश गुप्त, डॉ0 रामजी पाण्डेय, पृष्ठ 1, प्रथम संस्करण, 1986

•